स्नातक कार्यक्रम

बी.ए. संस्कृत (विशेष) कार्यक्रम

पाठ्यक्रम -**BSKC** -106

काव्यशास्त्र और साहित्यिक आलोचना

सत्रीय कार्य

(जनवरी, **2025** एवं जुलाई, **2025** सत्रों के लिए)

BSKC -106

काव्यशास्त्र और साहित्यिक आलोचना

मानविकी विद्यापीठ
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली- **110068**

स्नातक कार्यक्रम

सत्रीय कार्य (2025-26)

पाठ्यक्रम शीर्षक- काव्यशास्त्र और साहित्यिक आलोचना

पाठ्यक्रम कोड : **BSKC** -106/**2025-26**

प्रिय छात्र/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य **(TMA)** है । सत्रीय कार्य के लिए **100** अंक निर्धारित किए गए हैं । सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जायेंगे ।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं । यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें ।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िये :

1.) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनाँक लिखिए ।

2.) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है :

अनुक्रमांक : .....

नाम : .....

पता : .....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : .....

सत्रीय कार्य कोड : .....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : .....

दिनाँक : .....

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. अध्ययन: सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाईयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ विशेष बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढ़ग से व्यवस्थित कीजिए।

2. अभ्यास: उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिन्दु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबन्धात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरम्भ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरम्भिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढ़ग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) उत्तर सही ढ़ग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियों न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. प्रस्तुति: जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ, तो उसे साफ़ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं के साथ।

नोट: याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है, अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ:

जनवरी, 2025 सत्र के लिए : 30 सितम्बर, 2025

जुलाई, 2025 सत्र के लिए : 31 मार्च, 2026

सत्रीय कार्य

BSKC -106

काव्यशास्त्र और साहित्यिक आलोचना

पाठ्यक्रम कोड : BSKC -106

पाठ्यक्रम शीर्षक :

सत्रीय कार्य: BSKC -106/TMA/2025-26

पूर्णांक : 100

नोट – सभी प्रश्न अनिवार्य हैं : –

1. काव्यशास्त्र के अभिप्राय एवं स्वरुप पर प्रकाश डालें । 20

   अथवा

   गद्यकाव्य के भेदों का विस्तार से वर्णन करें।

2. काव्यप्रकाश के अनुसार व्यंजना शब्दशक्ति का विशद् विवेचन करें। 20

   अथवा

   मम्मट के काव्य हेतु का विस्तार से वर्णन करें।

3. साहित्य दर्पण के अनुसार महाकाव्य का वर्णन करें । 10

   अथवा

   मम्मट के अनुसार काव्यप्रयोजन को स्पष्ट करें ।

4. "रससूत्र" का विवेचन करें । 10

   अथवा

   अभिहितान्वयवाद का वर्णन करें

5. अर्थान्तरन्यास अथवा उत्प्रेक्षा अलंकार का लक्षण बताते हुए उदारण को स्पष्ट कीजिए। 10

6. निम्नलिखित श्लोक में कौन–सा अलंकार है लक्षण बताते हुए स्पष्ट कीजिए। 10

   कमलमनम्भसि कमलेच कुवलयेतानि कनकलतिकायाम्।
   सा च सुकुमारसुभगेत्युत्पातपरम्परा केयम्।।

   अथवा

   ज्योत्स्नाभस्मच्छुरणधवलाविभ्रतीतारकास्थी–
   न्यन्तर्धानव्यसनरसिका रात्रिकापालिकीयम्।
   द्वीपाद् द्वीपं भ्रमति दधती चन्द्रमुद्राकपाले
   न्यस्तं सिद्धाञ्जनपरिमलं लाञ्छनस्य च्छलेन ।।"

7. आर्या अथवा मालिनी छंद का लक्षण देते हुए उसके उदाहरण श्लोक का स्पष्टीकरण लिखिए। 10

8. निम्नलिखित श्लोक में कौन–सा छंद है उसका लक्षण बताते हुए स्पष्टीकरण दीजिएः 10

   अर्थो हि कन्या परकीय एव।
   तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतः ।
   जातो ममायं विशदः प्रकामम्।
   प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा ।।

   अथवा

   पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या
   नादत्ते प्रियमण्डनाऽपि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।
   आधे वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः
   सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम् ।।